# समावेशी शिक्षा में विद्यालय प्रमुख की भूमिका : राजस्थान के संदर्भ में

लेखक :विराज चौहान

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

## मोडयूल का विषय :--

समावेशी शिक्षा में विद्यालय प्रमुख की भूमिका : राजस्थान के सन्दर्भ में |

## मोडयूल के उद्देश्य:--

1. समावेशन की विस्तृत समझ विकसित करना |

2. विद्यालयी गतिविधियों में समावेशन की आवश्यकता को समझना |

3. समावेशन की आवश्यकता को समझते हुए विद्यालय की गतिविधियों में आवश्यक सुधार करना |

4. समावेशन की समझ को अपने तथा अपने शिक्षकों के व्यवहार में परिलक्षित करना |

## प्रस्तावना :---

21वीं सदी की सबसे प्रासंगिक और अपरिहार्य आवश्यकता समावेशन है | समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती हुई खाई के कारण समावेशन की मांग ना सिर्फ न्यायोचित है बल्कि आवश्यक भी है ताकि एक समरस समाज का निर्माण हो सके |यह सच है कि समावेशन की प्रक्रिया अपनी ही गति से चलती है परन्तु जरुरी है की समावेशन को लेकर एक सकारात्मक सोच रखी जाए | बिना सकारात्मक सोच के ना तो कोई प्रक्रिया आगे बढ़ेगी और ना ही कोई परिणाम निकल सकेगा |

पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक न्याय और विकास के लिए हर क्षेत्र में समावेशन ने जोर पकड़ा है तो शिक्षा भी कैसे अछूती रहती ! सच तो यह है की शिक्षा के बिना हर क्षेत्र में समावेशन या तो अधूरा रहेगा या विकृत, धन्यवाद इस बात का कि नई सदी में समावेशी शिक्षा की अवधारणा को सही अर्थों में समझा और आत्मसात किया है जिससे इसकी स्वीकार्यता बढ़ी है |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु संख्या 6 में इंगित है कि शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का सबसे प्रभावी साधन है | समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा ना सिर्फ स्वयं में एक लक्ष्य है बल्कि एक आदर्श समाज के निर्माण के लिए भी अनिवार्य है | जिसमे प्रत्येक नागरिक को अपने सपने संजोने,विकास करने और राष्ट्र हित में योगदान करने का अवसर उपलब्ध हो |

यह शिक्षा नीति ऐसे लक्ष्यों को लेकर आगे बढती है जिसमे भारत देश के किसी भी बच्चे के सीखने व आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से सम्बंधित परिस्थितियां बाधक ना बन जाएँ | यह नीति इस बात की पुष्टि करती है कि स्कूल शिक्षा में पहुँच,सहभागिता और अधिगम परिणामों में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों को दूर करना सभी शिक्षा क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों का लक्ष्य होगा |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि विद्यालय की संस्कृति के मूल में बदलाव आये जिसमें शिक्षा प्रणाली के सभी प्रतिभागी यथा शिक्षक,प्रधानाचार्य,प्रशासक,काउंसलर और छात्र भी शामिल है | सभी छात्रों की आवश्यकताओं , समावेशन और समता की धारणाओं और सभी व्यक्तियों के सम्मान, प्रतिष्ठा और निजता के प्रति संवेदनशील होंगे |इस तरह की शैक्षिक संस्कृति छात्रों को सशक्त व्यक्ति बनने में मदद करेगी जो अपने समाज के कमजोर नागरिकों के प्रति भी जिम्मेदार होंगे |

## पृष्ठभूमि :--

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है |यहाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विविधता दिखाई देती है चाहे खान पान हो, रहन सहन हो, पर्व त्यौहार, पोशाक,भाषा , बोली, रंग रूप, रीति रिवाज, सभी में विविधता नजर आती है |यही हाल शिक्षा का भी है कहीं पूर्ण संसाधनों से युक्त प्रत्येक मानक पूरा करता हुआ विद्यालय,कुशल प्रबंधन है,दक्ष शिक्षक है,अनुशासित और पोषित छात्र है तो दूसरी और न्यूनतम मानक को पूरा करने की कोशिश में संसाधन विहीन स्कूल भी है जहाँ बड़ी संख्या में कुपोषित छात्र पढ़ने आते है | सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के हिसाब से आज भी लाखों बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा से वंचित है इनमें खासकर दिव्यांग, अनुसूचित जाति और जन जाति, खानाबदोश, अपराधी प्रवृत्ति के बच्चे , भिक्षा वृत्ति वाले बच्चे और कुछ पिछड़ा वर्ग के बच्चे विद्यालय के दायरे से बाहर है |वास्तविक चुनौती इन्हीं बच्चों के समावेशन को लेकर है इस हेतु शिक्षा में समावेशन की महती आवश्यकता है | यद्यपि भारतीय शिक्षा प्रणाली और क्रमिक सरकारी नीतियाँ के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी स्तरों में अपवर्जनों के अन्तराल को कम करने की दिशा में प्रगति की है किन्तु असमानता आज भी देखी जाती है अंतर सिर्फ इतना है की इसकी मात्रा कहीं कम तो कहीं बहुत ज्यादा है |

अपवर्जन के विभिन्न रूपों को दर्शाते वीडियोस .....

1. लगान  मूवी की प्रचलित दृश्य .. https://youtu.be/j9wlb35BL0Q?si=TvogQFlDlKRjDbye
2. कवि नामक एक शोर्ट फिल्म .....

   https://youtu.be/62qLt6X1AK0?si=L3saNF6uF2sosJY

## समाजिक अपवर्जन आंकड़ों की नजर में.

## दण्ड चित्र :1

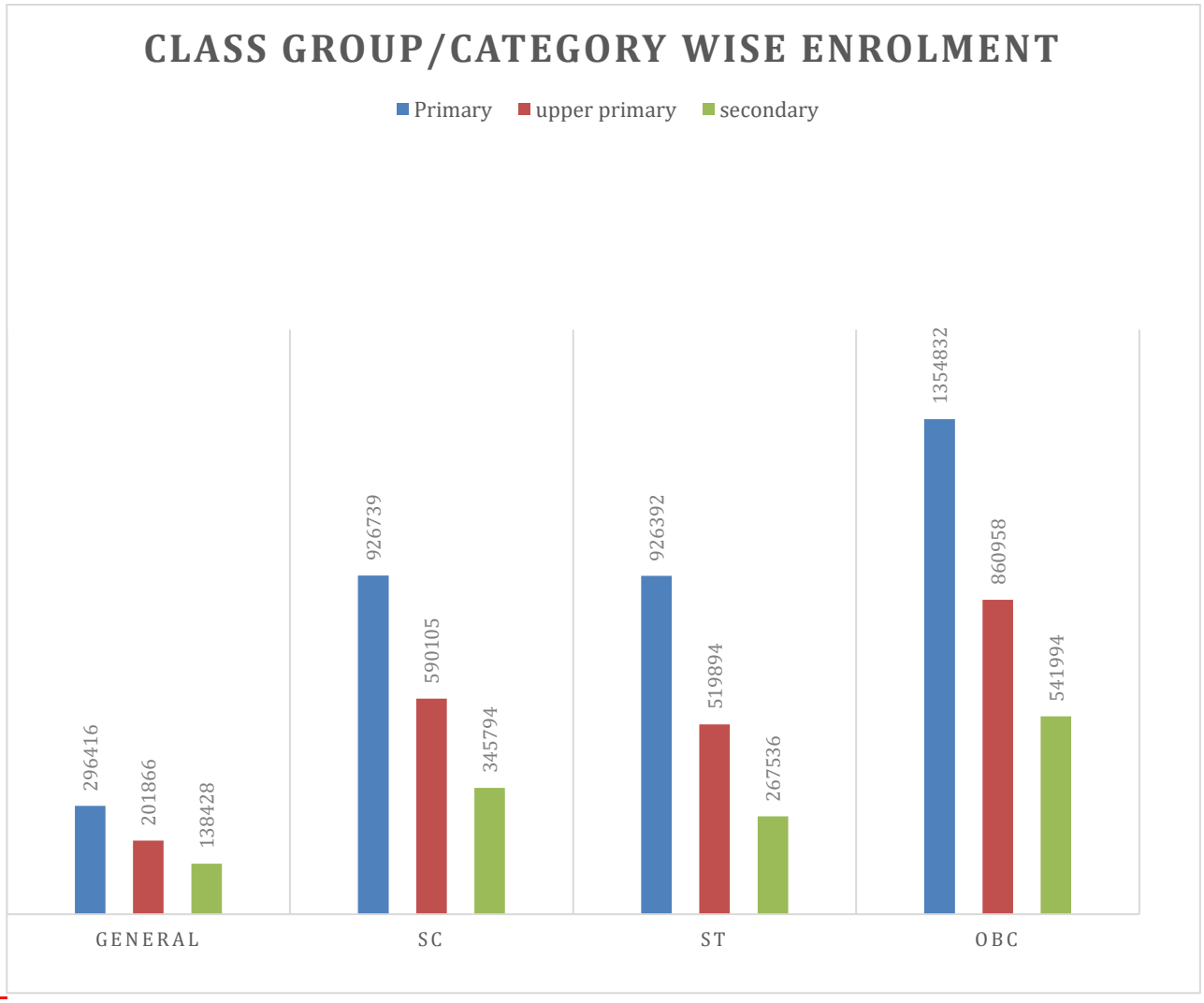


आंकड़े .....

1 राजस्थान राज्य

2 वर्ष 2023-24

3 साभार शाला दर्पण पोर्टल

# दण्ड चित्र ...2

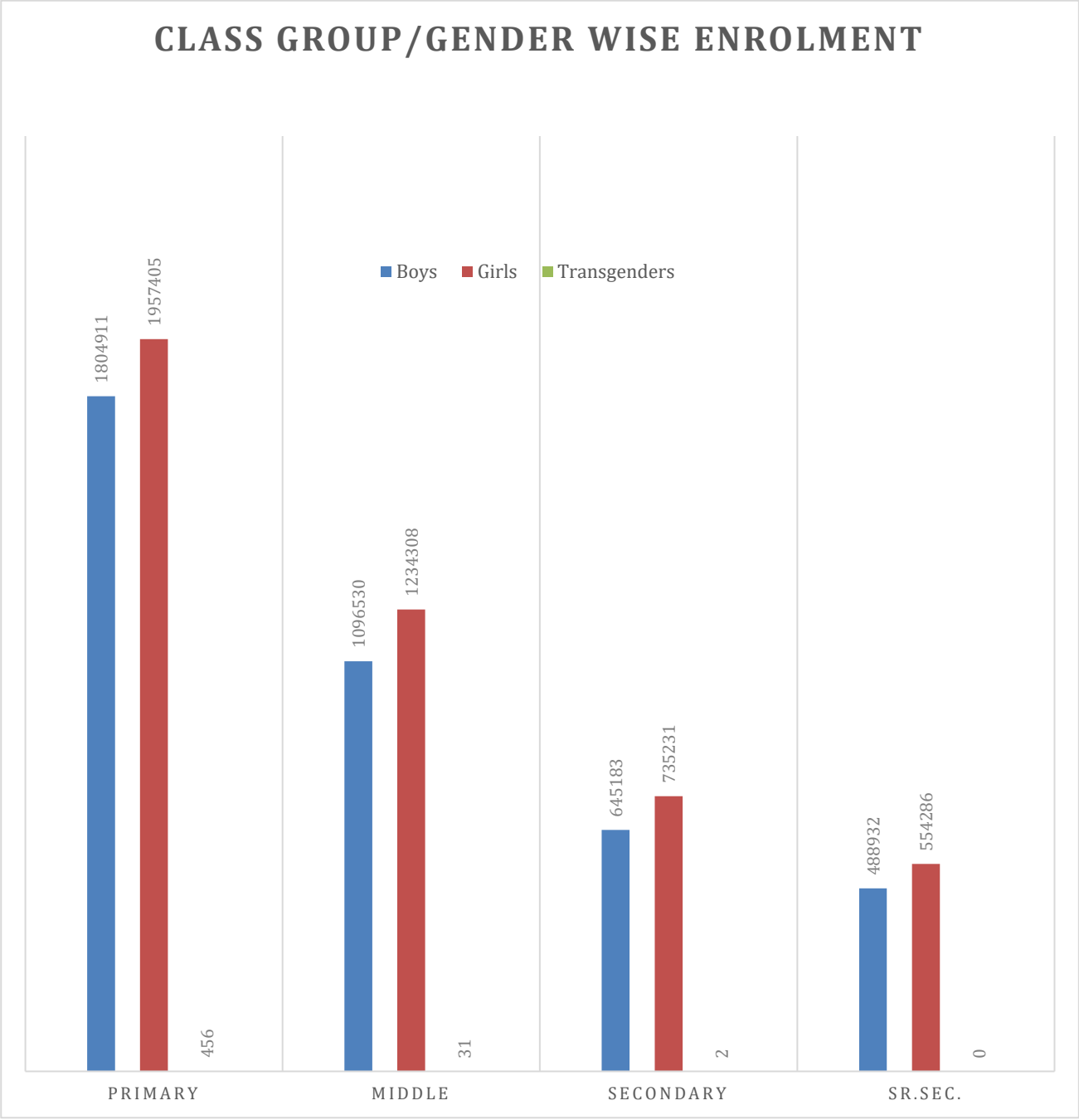


आंकड़े .....

1 राजस्थान राज्य

2 वर्ष 2023-24

3 साभार शाला दर्पण पोर्टल

## आपके विचार में ...

1. विद्यालय में अपवर्जन के कौन कौन से स्वरुप देखने को मिलते है ? प्राथमिकता के आधार पर किन्ही तीन को लिखिए ?

---

---

---

---

---

2. एक विद्यालय प्रमुख के रूप में उनके समाधान क्या हो सकते है ? किन्ही तीन का विवरण दें ?

---

---

---

---

---

## शिक्षा में समावेशन :--

शिक्षा में समावेशन से तात्पर्य है कि सभी बच्चों की पढाई एक साथ एक ही विद्यालय में हो | कक्षा कक्ष उस समाज को प्रतिबिंबित करता हो जिसमें सभी प्रकार के बच्चे होते है | व्यक्तिगत भिन्नताओं से युक्त एक कक्षा में शिक्षण कार्य करना बहुत चुनोती पूर्ण है| ऐसे में समावेशी शिक्षा एक अच्छा विकल्प हो सकती है | समावेशन के दर्शन को ना केवल एक कक्षा बल्कि पुरे विद्यालय द्वारा अपनाया जाना चाहिए जिससे पूरा शिक्षण कार्यक्रम प्रत्येक बच्चे के लिए सार्थक और प्रासंगिक बन सके |

NCF - 2005 के अनुसार "समावेशन की प्रक्रिया में बच्चों को ना केवल लोकतंत्र की भागीदारी के लिए सक्षम बनाया जा सकता है बल्कि यह सीखने एवं विश्वास करने के लिए भी सक्षम बनाया जा सकता है कि लोकतंत्र को बनाये रखने के लिए दूसरों के साथ रिश्ते बनाना, अन्तः क्रिया करना भी महत्वपूर्ण है | समावेशन की नीति को प्रत्येक विद्यालय तथा पूरी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक रूप से लागू किये जाने की जरुरत है | प्रशासकों एवं अध्यापकों को यह समझना होगा कि भिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा भिन्न क्षमता स्तर के बच्चे एक साथ पढ़ते है तो कक्षा का वातावरण और समृद्ध तथा प्रेरक हो जाता है |

## एक अपवर्जित कक्षा का स्वरुप :-----

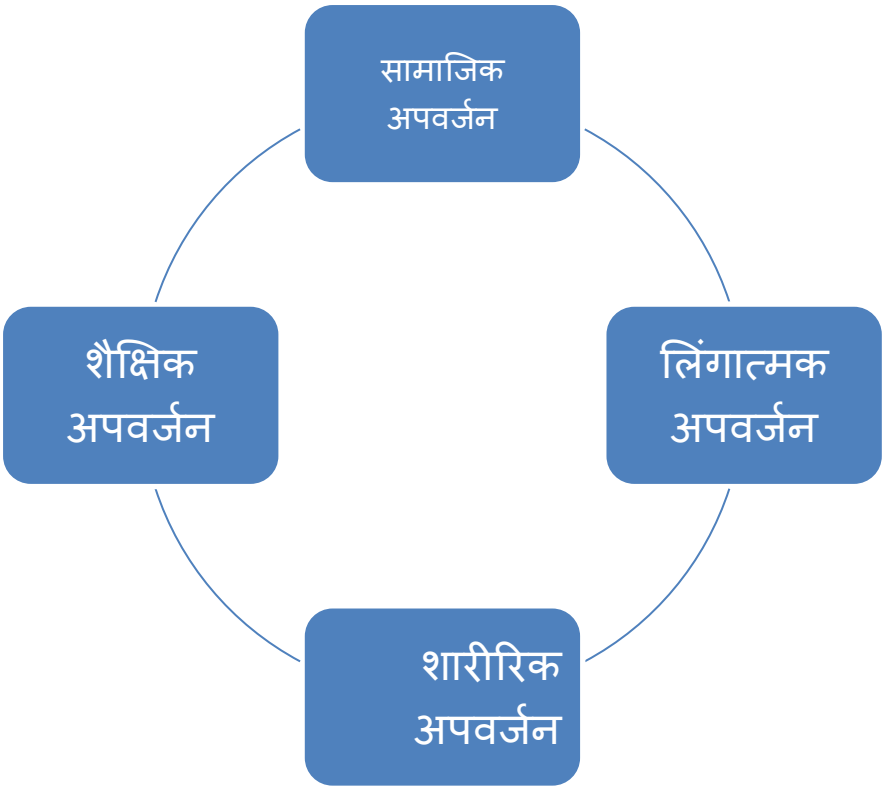


## एक समावेशी कक्षा स्वरुप :------

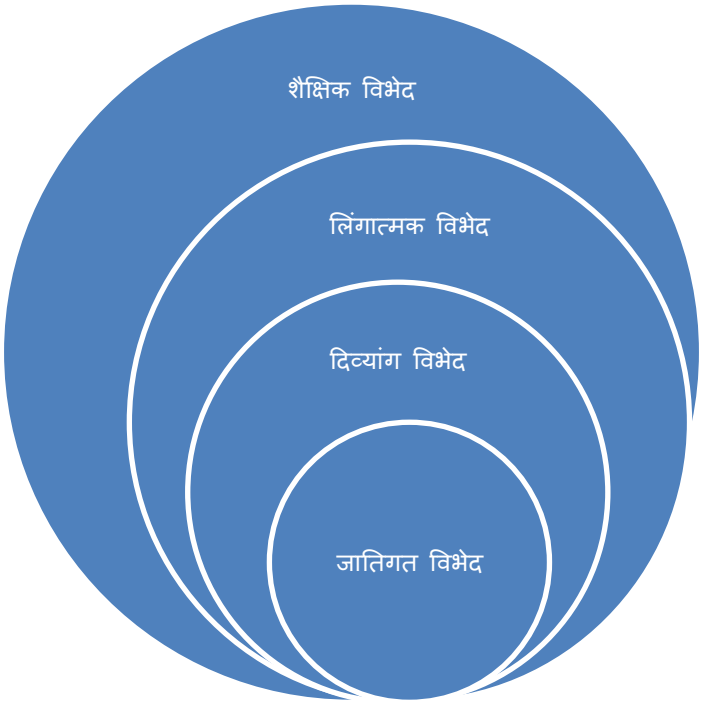


## केस स्टडी 1 .... " हमें मंच क्यों नहीं मिलता ?"

शाहिस्ता ,नुसरत और बसमीना विद्यालय के हर पर्व पर छात्र छात्रों को नाचते गाते देखती तो उदास हो उठती थी ,ना जाने क्यों मस्तिष्क में यह बात बैठी हुई थी कि हम मंच पर नाच गा नहीं सकते | ना तो मैडम ऐसा करेंगी और ना ही हमारे परिवार जन इसकी इजाजत देंगे | जैसे ही विद्यालय में कोई कार्यक्रम होने को होता था इनके चेहरे मुरझा जाते थे | हमेशा चहकती रहने वाली इन बालिकाओं के इस व्यवहार को जब विद्यालय की अध्यापिकाओं ने नोटिस किया और संस्था प्रधान से इस बारे में बात की , संस्था प्रधान ने उन छात्राओं को बुलाकर पूछा ... मगर कोई जवाब नहीं मिला | कई बार की कोशिशों के परिणाम स्वरुप छात्राओं ने बताया कि वो भी स्टेज पर गाना चाहती है मगर उनके परिजन इसकी इजाजत नहीं देंगे क्योंकि उनके यहाँ इसे अच्छा नहीं माना जाता |

फिर शुरू हुआ प्रयास ! परिजनों से बात कर उन्हें समझाने का ... कोशिशों पर कोशिशें हुई और एक अच्छी शुरुआत मोहम्मद साहेब की नज्मों से हुई ,फिर गजलें आई फिर कव्वाली और धीरे धीरे नृत्य भी मंच पर हुआ और परिजनों द्वारा सराहा और पुरूस्कृत भी किया गया और ये बालिकाएं परिवर्तन करने वालों की जमात में शामिल हो गयी |

शाइस्ता ,बसमीना और नुसरत अपनी शिक्षिकाओं के साथ

## केस स्टडी 2 ..... " मेरी जगह कहाँ है "

पिछले कुछ दिनों से विद्यालय प्रांगण में एक बच्चा रोज नजर आ रहा था | ध्यान इसलिए गया कि वह अन्य बच्चों से भिन्न था तथा जब तक वह स्कूल में रहता सभी बच्चों का ध्यान उसी की और रहता था | जुलाई का महीना होने के कारण कुछ बच्चे ऐसे

भी स्कूल आ रहे थे जो विद्यालय में नामांकित नहीं थे | शिक्षक उसे विद्यालय आने से नहीं रोकते थे किन्तु जब वह बालक विद्यालय में ज्यादा देर तक रुकने लगा तो शिक्षकों का ध्यान उसकी ओर गया उन्होंने उससे बात की कि वह किस स्कूल में पढ़ता है और अपने स्कूल में ना जाकर यहाँ क्यों आता है | जानकार बड़ा ही आश्चर्य हुआ की वह उसी क्षेत्र के एक निजी विद्यालय में पढता था किन्तु वहां से उसकी शारीरिक बनावट के कारण टी.सी.काट दी गयी और वह यह समझ कर की अब वह किसी भी स्कूल में नहीं पढ़ सकता सिर्फ खेलने के उद्देश्य से यहाँ आने लग गया |

विद्यालय के शिक्षकों ने घटना संस्था प्रधान को बताई उन्होंने तुरंत उस बच्चे से बात की और अगले दिन उसके अभिभावकों को साथ लाने को कहा | बालक बहुत ही सहज और सरल व्यक्तित्व का था और समझदार भी .... अगले ही दिन उसके माता पिता आये और हमारे कहने पर उन्होंने उस बच्चे को हमारे विद्यालय में नामांकित कर दिया और प्रसन्नचित्त घर चले गए |अध्यापकों ने उसका कक्षा में परिचय करवाया और कक्षा का स्तर छोटा होने के कारण उसकी शारीरिक बनावट के बारे में भी हलके फुल्के अंदाज में समझाया गया | वह बच्चा बस कुछ दिन में ही विद्यालय में ऐसा रच बस गया की प्राथमिक खंड ही नहीं अन्य शिक्षकों की जबान पर भी उसी का नाम रहता क्योंकि वह नियमित ,आज्ञाकारी और हर गतिविधि में आगे बढ़ कर भाग लेता और शिक्षक भी उसे प्रोत्साहित करते | आज वह बच्चा विद्यालय की मुख्य धारा का हिस्सा है और उस बच्चे का नाम है ....विष्णु

विद्यालय में पुरुस्कृत होता हुआ विष्णु

आओ विचार करें .....

1. उपरोक्त केस स्टडीज में आपको कौन कौन से अपवर्जन नजर आये ?

---

---

2. आपके विचार से इनके और क्या समाधान हो सकते थे ?

---

---

3. “ समाजीकरण और समावेशन “ में क्या समानता है ?

---

---

4. बच्चों के समावेशन के अभिकरण कौन कौन से हो सकते है ?

---

---

5. इस मोड्यूल के आधार पर क्या अब आप बता सकते है कि समावेशन की क्या आवश्यकता है ?

---

---

**संदर्भ :---**


1. मदन मोहन झा ( 2007 ) समावेशी शिक्षा , नई दिल्ली , प्रकाशन संस्थान
2. Jha m.m. (2008 ) school without walls , Inclusive Education for all .
3. NEP 2020 : समतामूलक और समावेशी शिक्षा : सभी के लिए अधिगम
4. NCF 2005 ; समावेशी शिक्षा और पाठ्यक्रम
5. शाला दर्पण पोर्टल .राजस्थान

**श्रीमती विराज चौहान**

**प्रधानाचार्य**

**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय , कठूमर**

**अलवर (.राज.)**